श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति

उद्‌बोधन

27 वाँ दीक्षान्त समारोह

21 दिसम्बर, 2019

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रबन्ध मण्डल व अकादमिक परिषद् के सदस्यगण, समस्त अधिष्ठातागण, संकाय सदस्यगण, सम्माननीय अतिथिगण, छात्र संघ के अध्यक्ष एवं पदाधिकारीगण, दीक्षान्त समारोह में भाग ले रहे पदक व उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो, उनके अभिभावकगण, भाइयो, बहनो, पत्रकार बन्धुओ और छायाकार मित्रो।

दीक्षान्त समारोह किसी भी विद्यार्थी, शिक्षक और समाज के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवसर होता है। शिक्षक और विद्यार्थी के तप का परिणाम और पुण्य-लाभ को समाज के व्यापक हित के लिए समर्पित करने का यह अवसर है। जीवन की वास्तविकताओं में प्रतिकूलताओं को अनुकूलताओं में बदलने की समझ और सामर्थ्य शिक्षा का प्रतिफल है। भौतिक संसार में अभ्युदय प्रगति तथा अन्तर्जगत में 'सर्वात्म' अथवा 'सर्वभूतहितेरतः' का भाव सच्ची शिक्षा से ही प्राप्त हो सकता है।

असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृत की ओर ले जाने वाली विद्या ही होती है- 'असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय।' इस विश्वविद्यालय का ध्येय वाक्य भी यही है- 'विद्ययाविन्दतेमृतम्।' अर्थात् विद्या से ही अमृत को प्राप्त किया जा सकता है।

हमारे शैक्षणिक संस्थान शिक्षा के साथ-साथ विद्या और उससे भी बढ़कर ज्ञान के प्रकाश को विस्तीर्ण करने वाले केन्द्र बने, ऐसी मेरी हार्दिक अभिलाषा है। शिक्षा ज्ञानोपलब्धि का साधन है। साधन में शुचिता का होना बहुत जरूरी है। इसके लिए शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को अनुशासित रहना होगा। विद्या का प्रतिफल आचार्य एवं शिष्य दोनों की सत्यनिष्ठा, ज्ञाननिष्ठा एवं धर्मनिष्ठा के द्वारा घटित होता है।

समकालीन परिवेश में यह जरूरी है कि हम आजीविका-कौशल के साथ-साथ विचार और व्यवहार में सार्वभौम मानवीय मूल्यों की स्थापना करें। उपाधि ग्रहण करने के अनन्तर विद्यार्थी एक उपकरण मात्र बनकर न रह जाए। उसके भीतर स्वतंत्र वैचारिक चेतना, तर्कपूर्ण बुद्धि, सत्य-असत्य का विवेक तथा अपने कर्त्तव्य अथवा धर्म के प्रति अटूट निष्ठा भी रहनी चाहिए।

आज दीक्षा प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों एवं उनके आचार्यों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ और यह आशा करता हूँ कि वे वाणी, विचार और व्यवहार से सदा-सर्वदा स्वयं को इसके योग्य प्रमाणित करेंगे।

हम उस प्राचीन गौरवशाली विरासत और परम्परा के उत्तराधिकारी हैं, जहाँ दीक्षा संस्कार के समय आचार्य सार्वकालिक सर्वोच्च मानवीय मूल्यों की अभिप्रेरणा का आदेश और उपदेश अपने विद्यार्थियों को प्रदान करते थे।

'यजुर्वेद' के 'तेत्तरीयोपनिषद्' की शिक्षावल्ली में यह उपदेश उपलब्ध है- ''सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायात् मा प्रमद, मातृदेवो भवः, पितृदेवो भवः, आचार्यदेवो भवः, अतिथिदेवो भवः ।स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ।''

इस संदेश के अनुसार हमें सदैव सत्य बोलने, अपने कर्त्तव्य का पालन करने, माता-पिता, गुरु और अतिथि में देवत्व बुद्धि रखते हुए, अपने सीखे हुए ज्ञान में निरंतर वृद्धि करनी चाहिए। लोक-कल्याण के लिए उसका विस्तार करते रहना चाहिए, ऐसा ऋषियों ने आदेश और उपदेश दिया है।

हमें अपने प्राचीन मूल्यों को धारण करते हुए समकालीन सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक चुनौतियों के समाधान की दिशा में योगदान के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। इसके लिए मानविकी और समाज विज्ञान के साथ-साथ वाणिज्य, विधि, प्रबंध, विज्ञान और तकनीकी आदि के क्षेत्रों में और अधिक अध्ययन और अनुसंधान पर बल देना होगा।

दर्शन हो या विज्ञान दोनों का विकास असंतोष, जिज्ञासा और प्राश्निक परम्परा के द्वारा होता है। प्रश्न खड़े करने और उनके समाधान खोजने की सामर्थ्य ही शिक्षा की निरंतरता है। मैं अपेक्षा करता हूँ कि आप निरंतर अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते रहेंगे।

मुझे प्रसन्नता है कि महाराणा प्रताप की शक्ति और मीरां की भक्ति से ओतप्रोत इस आदिवासी बहुल क्षेत्र में स्थित यह विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति के सोपान आरोहण कर रहा है। पिछली बार राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद ने विश्वविद्यालय को 'ए' ग्रेड प्रदान की थी। मैं आशा करता हूँ कि विश्वविद्यालय के कुलपति और यहाँ के शिक्षक मिलकर, इस बार पहले से भी अधिक उत्तम प्रदर्शन करते हुए सर्वोत्तम ग्रेड प्राप्त करेंगे।

गत 26 नवम्बर को पूरे देश में 70वाँ संविधान दिवस मनाया गया। आपको बताना चाहता हूँ कि संविधान हमारा मार्गदर्शक है, हमारा मूल ग्रन्थ है। संविधान की प्रस्तावना में राष्ट्र की मूल भावना का उल्लेख है। संविधान ने हमें मौलिक अधिकार दिए हैं। संविधान के अनुच्छेद 51 (क) में हमारे द्वारा किए जाने वाले कर्त्तव्यों को परिभाषित किया गया है। मौलिक अधिकार और कर्त्तव्य, ये दोनों ही संविधान के प्रमुख स्तम्भ हैं।

मौलिक अधिकारों की तो हम बात करते हैं, लेकिन आवश्यकता है कि हम हमारे कर्त्तव्यों को जानें, समझें और उनके अनुरूप ही अपना कार्य और व्यवहार करें।

आप लोग युवा हैं। राष्ट्र निर्माण में आपको महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए संविधान में प्रदत्त कर्त्तव्यों को आप लोग आचरण में लाकर आगे बढ़ें।

यदि हम सभी ने ऐसा प्रयास किया तो निश्चित तौर पर भारत देश को आगे बढ़ाने और स्वयं के जीवन को भी प्रोन्नत करने में यह कदम बेहतरीन साबित होगा।

आमजन को संविधान की जानकारी होना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व सामाजिक समरसता के लिए मूल कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा। मैं चाहता हूँ कि विश्वविद्यालयों में युवाओं को मूल कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए अभियान चलाया जाए। देश की युवा पीढ़ी को मूल कर्त्तव्यों के बारे में बताया जाना आवश्यक है।

संविधान के अनुच्छेद 51(क) पर विचार-विमर्श करने के लिए गोष्ठियाँ व सेमीनार आयोजित की जाएँ।

विश्वविद्यालय अपनी शैक्षणिक श्रेष्ठता और अद्यतन शोध द्वारा ही राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। विद्यार्थी एवं शोधार्थी जिम्मेदार नागरिक बनें। सच्चाई एवं ईमानदारी से दायित्वों का निर्वहन करें।

राष्ट्र को विश्व पटल पर विश्वगुरु के रूप में स्थापित करने में एकजुट होकर सक्रिय एवं सार्थक भूमिका निभाएँ।

आज उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों, उनके माता-पिता और अभिभावकों के साथ यहाँ उपस्थित सभी महानुभावों को नववर्ष - 2020 की बधाइयों के साथ उज्ज्वल भविष्य की एक बार पुनः शुभकामनाएँ।

धन्यवाद, जय हिन्द।